

डॉ० हरिदास सिद्धान्त वागीश प्रणीत शिवाजीचरितम् नाटक में वर्णित
शिवानन्दचरित

ममता

शोध छात्रा

इस्माईल नेशनल महिला (पी.जी.)

महाविद्यालय, मेरठ।

प्रस्तावना :-

शिवाजीचरितम् नाटक के नायक शिवाजी है। जिन्हें नाटक में शिवानंद सिंह के रूप में चित्रित किया गया है। प्रस्तावना के अन्त में सूत्रधार द्वारा मञ्च पर शिवानन्द को प्रस्तुत किया गया है। वह पाठशाला में अपने सहपाठियों के साथ एक योद्धा के रूप में मंच पर उपस्थित होते हैं।¹ शिवानन्द एक सूर्यवंशी क्षत्रिय शासक थे— **भास्कर सोऽयं सूर्यावंशीयो भूस्वामिसूनुः।²** उनके पिता साहनाथ बीजापुर के सुलतान नादिरसाह के राजस्व सचिव थे— **दूतः । योऽयं भवतो राजस्वसचिवः पुण्यपत्तनभूस्वामी साहनाथ तस्य नन्दनः शिवानन्दः।³** सात वर्ष की अवस्था में ही शिवानंद को उनके पिता ने आचार्य कौण्डदेव के संरक्षण में सौंप दिया था— **येन हि शिवानन्दसा सप्तमे वर्षे तस्मिन् पुण्यपत्तन एव तेषामभिभावकतायामाचार्य्य कौण्डदेवं नियोज्य अद्य द्वादशवर्षाणि यावदवभवन्तमुपासे।⁴** उनकी माता जयन्ती देवी ने बचपन से उन्हें अनेक पौराणिक कथाओं के माध्यम से राम, अर्जुन आदि वीरों की गाथाएं सुनाई थी।⁵ जिसके कारण विद्यार्थी जीवन से ही उनके विचारों में क्रांति की भावना जाग्रत हो गयी थी। वे सदैव देश को यवनों से मुक्त कराने के बारे में विचार करते रहते थे। अतः इन सबका प्रभाव उनके जीवन में पड़ना स्वाभाविक था।

नाट्यदर्पण के अनुसार—धीरोदात्त नायक को महासत्त्व अति गम्भीर, क्षमावान, न्यायी एवं दूरदर्शी आदि गुणों से युक्त बताया है।⁶ दशरूपक एवं साहित्यदर्पण में उत्कृष्ट अन्तःकरण वाला, अत्यन्त गम्भीर, क्षमाशील, आत्मश्लाघा न करने वाला, स्थिर, अहंभाव को दबाकर रखने वाला, दृढव्रती आदि गुणों से युक्त नायक को धीरोदात्त नायक कहा है।⁷ धीरोदात्त नायक के उपर्युक्त लक्षणों के आधार पर ही शिवानंद को निःसंदेह धीरोदात्त नायक माना जा सकता है। शिवानंद के चरित्र की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं —

क्षत्रिय धर्म का पालक –

शिवानन्द क्षत्रिय धर्म के पालक हैं। शिवानन्द का प्रमुख लक्ष्य स्वतन्त्र धर्म राज्य की स्थापना करना है। वह क्षत्रिय धर्म का पालन करने के लिए ही वह शास्त्र- विद्या की अपेक्षा शस्त्र विद्या को ही श्रेष्ठ मानते हैं— शिवा। सर्व्वथैवास्माभिः शास्त्रं हेयं शस्त्रञ्चादेयम्।⁸ शिवानन्द सभी वर्णों का सम्मान एवं आदर करते हैं। वे ब्राह्मण को शस्त्र उठाने के लिए भी बाध्य नहीं करते हैं। वे भास्कर शर्मा से कहते हैं— ब्राह्मणो भवान् तद् भवदीयहरते विन्यस्तं पुस्तकमैव शोभते न पुनः शस्त्रं⁹ शिवानन्द संघ शक्ति एवं एकता में विश्वास रखते हैं। वे एकता के द्वारा ही स्वतन्त्रता प्राप्ति का अपना लक्ष्य पूर्ण करना चाहते हैं—

लोका वियुक्ता बहवोऽप्यसाराः

क्षुद्रोऽपि संघस्तु गुरुक्रियाकृत्।

हान्ति स्फुलिङ्गानपि दारुशुष्कं

कृशानुशशिस्तु दहत्यरण्यम्।।¹⁰

शिवानन्द मस्जिदों का भी अपने मंदिरों जैसा आदर एवं सम्मान करते हैं। यवनों के धर्म को अपने धर्म की तरह समझते हैं। निरःसहाय यवनों की स्त्रियों को आदर एवं सम्मान देते हैं।

गुरु भक्त –

शिवानन्द एक श्रेष्ठ गुरु भक्त हैं। गुरु के प्रति उनके मन में अगाध श्रद्धा एवं आस्था है। वे गुरु को हमेशा प्रसन्न रखना चाहते हैं। इसीलिए वह पाठशाला बंद हो जाने पर गुरु के प्रति अपना धर्म समझकर गुरु के जीवन यापन के लिए सामग्री और मासिक मुद्रा की व्यवस्था करते हैं— इदमार्याया दुकूलम्, एतदार्यास्याहतं वासोयुगलम्, इमानि भवतां भोज्यानि, एषा च भवतो यावज्जीवमेव मासिकी वृत्तिः।¹¹ द्वितीय अंक में साथियों सहित शिवानन्द के पाठशाला से चले जाने पर महेश्वर शास्त्री चिन्तित हो जाते हैं। शिवानन्द उनसे यवन विनाश हेतु अनुमति प्राप्त करने के लिए अनेक वस्तुएं भेंट करते हैं एवं उनसे युद्ध के लिए अनुमति प्राप्त करते हैं।¹² इसीलिए तोरण दुर्ग पर आक्रमण करने से पहले गुरु का आशीर्वाद प्राप्त करने के उद्देश्य से वे भास्कर शर्मा को पाठशाला में गुरु के पास अनुमति लेने के लिए भेजते हैं— अधुना च प्रागेव तोडनदुर्गमधिकर्तुमुद्ञ्जनो भवदाशिषमादातुमुपामिदं प्रैषयत्।¹³

वीर पुरुष –

शिवानन्द एक सच्चे वीर योद्धा हैं। वे दुष्ट के साथ दुष्टता व सज्जन के साथ सज्जनता का व्यवहार करना अच्छी तरह से जानते हैं। वे तोरण दुर्ग को वश में करने के उद्देश्य से दुर्गाध्यक्ष के पास साधुवेश में जाते हैं— (इति निष्क्रम्य दण्डकमण्डलुमता साधुना सह प्रविश्य) एष देवः उपसर्प एनम्।¹⁴ भेद खुल जाने पर शिवानन्द वीरतापूर्वक शत्रुओं का सामना करते हैं एवं युद्ध में करिम को पराजित कर देते हैं।¹⁵ सायेस्ता खां भी शिवानन्द की वीरता की प्रशंसा मुक्त कंठ से करता है।¹⁶ षष्ठ अंक में वे साथियों सहित शव के रूप में शस्त्र सहित खाट लिए हुए स्वयं गुरुदशा को प्राप्त किये ब्राह्मण का रूप धारण कर सायेस्ताखां के पास जाते हैं और गुफा में प्रवेश की अनुमति प्राप्त कर लेते हैं किन्तु रहस्य खुल जाने पर वह पूर्ण वीरता के साथ उसका सामना करते हैं।

श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ –

शिवानन्द की राजनीतिज्ञता का परिचय सप्तम अंक में भी प्राप्त होता है। औरंगजेब के द्वारा विरक्ति दिखाने पर शिवानन्द को क्रोध आ जाता है। वे अपने क्रोध को प्रकट नहीं करते वरन् किसी बहाने से वहाँ से चल देते हैं। क्योंकि वह अच्छी तरह जानते हैं कि वे शत्रु के दरबार में हैं।¹⁷ अष्टम अंक में सम्राट द्वारा बन्दी बना लिये जाने पर चिकित्सा के लिए आये हुए छली वैद्य की वे सभी बातों को भी अच्छी प्रकार से समझ जाते हैं तथा वे वैद्य को वैसा ही उत्तर देते हैं।¹⁸ तदुपरान्त वे कपटपूर्वक वहाँ से निकल भागते हैं और अपने देश पहुँच जाते हैं।

दूरदर्शी –

वास्तव में वही राजा सफल होता है जो राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ दूरदर्शी भी होता है। शिवानन्द में दूरदर्शिता का गुण निहित है। पंचम अंक में यवनों द्वारा निमन्त्रित करने पर भी वे उन पर विश्वास नहीं करते हैं। इसलिए वे बीजापुर के सेनापति आफजलखां के पास कवच धारण करके जाते हैं और आफजल खां के द्वारा धोखे से आक्रमण करने पर उसे मार देते हैं—

प्रत्येमि नाहं यवनं वनञ्च नृशंससत्त्वाश्रयमुच्छ्रितञ्च ।

तत् सावधानैर्भवितव्यस्मिन् अस्माभिराशङ्कितदुष्टभावैः ।।¹⁹

बीजापुर सुल्तान के साथ शत्रुता हो जाने पर जब औरंगजेब ने बीजापुर सुल्तान तथा शिवाजी को एक साथ जीतने के लिए सायेस्ता खां के सेनापति के रूप में एक विशाल सेना भेजी तो शिवाजी

पुण्यपत्तन दुर्ग को छोड़कर पर्णशाला दुर्ग में चले जाते हैं। इससे भी उनके दूरदर्शी होने की पुष्टि होती है।

स्वाभिमानी –

क्षत्रिय होने के कारण शिवानन्द का स्वाभिमानी होना स्वाभाविक ही है। सायेस्ताखां द्वारा प्रार्थना करने के लिए कहने पर वे कहते हैं— वीरो वरं जीवनमेव दत्ते न त्वर्थनां वैरिजने विद्यते।²⁰ उनके स्वाभिमानी होने का परिचय हमें सप्तम अंक में भी दिखाई देता है। औरंगजेब के निमंत्रण पर शिवानन्द दिल्ली पहुँच जाते हैं। परन्तु बादशाह द्वारा यथोचित आदर एवं सम्मान न मिलने पर उनके स्वाभिमान को ठेस पहुँचती है और उन्हें क्रोध आ जाता है। वे वहाँ से चले जाने की अनुमति मांगते हैं— तदनुजानातु मां स्वस्थानमेव प्रस्थातुं वादसाहः।²¹ अष्टम अंक में भी उनका स्वाभिमान दृष्टिगोचर होता है। सम्राट द्वारा बन्दी बना लिये जाने पर भी उनका स्वाभिमान व साहस कम नहीं होता है—

शतं चेष्टस्व मां रोद्धुं तत्र त्वं नहि शक्यसि।

चिरं रुद्धं हि देहेन जीवात्मा याति कालतः।।²²

भाग्यवादी –

शिवानन्द कर्म के साथ-साथ भाग्य पर भी विश्वास करते हैं। सप्तम अंक में शिवानन्द जयसिंह के साथ औरंगजेब के पास जाते हैं। वहाँ बांया नेत्र फड़कने पर अनिष्ट की आशंका करते हुए अपने कुल देवता से कल्याण की कामना करते हैं— शिवा। (वामनयनस्पन्दनमभिनीय वादसाहव्ययहारमवेक्ष्य च साशङ्कमात्मगतम्) हन्त ! स्पन्दते वामाक्षिः लक्ष्यते च विरागो वादसाहस्य। 'तन्न जाने किमनिष्टं दर्शयिष्याति दैवम्। अथवा कुलदेवतैव सर्वथा स्वास्ति करिष्यति।²³ शिवानन्द की माता बचपन में उन्हें पौराणिक गाथाएं सुनाया करती थीं। अतः शिवाजी पौराणिक ज्ञान सम्पन्न हैं। मुगल बादशाह की क्रूरता को दर्शाते हुए उन्हें रामायण व महाभारत के उदाहरण देते हैं— शिवा! अरे चिरयवनदास जयसिंह सूनो!²⁴

दृढ़ निश्चयी –

शिवानन्द दृढ़ निश्चय वाले हैं। नवम अंक में यवनों द्वारा अत्यधिक विपत्ति उपस्थित होने पर तथा मुरादर्दनसिंह द्वारा समझाये जाने पर भी वे अपने निश्चय से विचलित नहीं होते तथा वे मुरादर्दनसिंह को यवनों का दास कहकर धिक्कारते हैं।²⁵

कुशल शासक —

विजयी होने के साथ-साथ शिवाजी शासन प्रबन्ध में भी दक्ष थे। हीराचल को उन्होंने जलदस्युओं के दमन एवं दुर्ग निर्माण के कार्यों में नियुक्त किया हुआ था। इस प्रकार शिवानंद एक कुशल शासक थे।

इस प्रकार शिवानन्द गुरुजनों का आदर करते हैं। दशम अंक में स्वदेश जाकर सभी गुरुजनों से मिलते हैं तथा यथोचित अभिवादन कर आशीर्वाद तथा उपहार प्राप्त करते हैं।²⁶ शिवानन्द अपनी अतीत की घटना को याद रखते हैं। इसीलिए वे पाठ विसर्जन के दिन को भी स्मरण करते हैं— शिवा। अयि! महावीर बन्धुयुगल ! अपि स्मर्यते तत् पाठशालायां पाठ विसर्जन वासरम्?²⁷ शिवानन्द कृतज्ञ भी हैं। वे महाराष्ट्र वैभव का कारण गोविन्द और भास्कर की योग्यता को ही बताते हैं— शिवा। भवतु। युष्योर्योग्यतैव निदानमस्य महाराष्ट्र वैभवस्म।²⁸ अन्त में, शिवानन्द सभी के कल्याण की कामना करते हैं—

काले वर्षतु वारिदो भवतु भूः सम्पन्नशस्या चिरात्

ईतिर्नश्यतु रीतिरस्तु रुचिरा भीतिः समा शाम्यतु।

हिन्दूना चिरभिन्नभिन्नमनसां नित्या भवत्वेकता

शिष्टानुग्रहदुष्टनिग्रहविधिं देश्येव चालम्बताम्।।²⁸

निष्कर्ष —

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हैं कि शिवानंद का चरित्र उच्च कोटि का है। शिवानन्द गुरुभक्त, वीरपुरुष, दूरदर्शी, श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ एवं क्षत्रिय धर्म के पालक हैं। अतः शिवाजीचरितम् नाटक में शिवानंद को धीरोदात्त नायक के सभी गुणों से अलंकृत किया गया है।

सन्दर्भ सूची

1. शिवाजीचरितम् — डॉ० हरिदास सिद्धान्त 'वागीश' प्रकाशन
सन् 1954 ई० प्राच्यवाणी प्रकाशन कलकत्ता, पृ० सं० —4
2. तथैव, पृ० सं०, — 18
3. तथैव, पृ० सं०, — 33
4. तथैव, पृ० सं० — 36

5. तथैव, पृ० सं०	—	59
6. नाट्य दर्पण	—	: रामचन्द्र गुणचन्द्र, ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट बडौदा, 1929, 1/6
7. दशरूपक	—	: धनंजय, सं, डॉ० श्रीनिवासशास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ, 2/4
8. शिवाजीचरितम्	—	: हरिदास सिद्धान्त 'वागीश' प्रकाशन सन् 1954 ई०, प्राच्यवाणी प्रकाशन कलकत्ता पृ० सं० — 6
9. तथैव, पृ० सं०	—	11
10. तथैव, पृ० सं०	—	1/23
11. तथैव, पृ० सं०	—	18
12. तथैव, पृ० सं०	—	18
13. तथैव, पृ० सं०	—	19
14. तथैव, पृ० सं०	—	23
15. तथैव, पृ० सं०	—	28
16. तथैव, पृ० सं०	—	62
17. तथैव, पृ० सं०	—	87—88
18. तथैव, पृ० सं०	—	95
19. तथैव, पृ० सं०	—	5/4
20. तथैव, पृ० सं०	—	6/23
21. तथैव, पृ० सं०	—	88
22. तथैव, पृ० सं०	—	83
23. तथैव, पृ० सं०	—	8/3
24. तथैव, पृ० सं०	—	86
25. तथैव, पृ० सं०	—	93
26. तथैव, पृ० सं०	—	116
27. तथैव, पृ० सं०	—	120
28. तथैव, पृ० सं०	—	126
29. तथैव, पृ० सं०	—	127